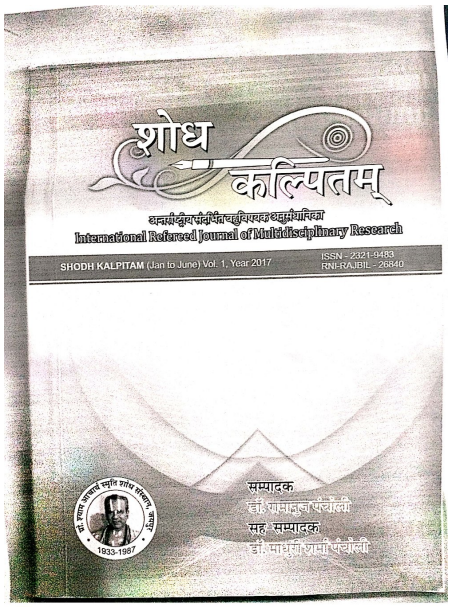

Contents

1.	अधम पात्र निष्ठ रतिः रस या रसाभास डॉ. रामानुज पंचोली,	1–3
2.	सामाजिक जन चेतना के अप्रितम कर्मयोगी–महात्मा कबीर डॉ. कमला कान्त शर्मा 'कमल'	4–13
3.	संस्कृत अध्ययन की महत्वता : एक दिग्दर्शन श्रीमति स्नेहलता चतुर्वेदी	14–16
4.	'उद्धवशतक' में कवि की सौन्दर्य दृष्टि डॉ. मधुरी शर्मा पंचोली	17–21
5.	राजस्थानी साहित्य में राजपूत जाति के कवियों का योगदान डॉ. रणजीतसिंह चौहान	22–28
6.	"संगीत के क्षेत्र में जोधपुर के कलाकारों का सांगीतिक योगदान" Dr. Sangeeta Arya,	29–36
7.	वर्तमान पाठयक्रम में परिवर्तन की आवश्यकतायें डॉ. गुरशरण कौर	37–45
8.	चित्तौड़गढ़ क्षेत्र में प्रचलित तुर्राकलंगी कला डॉ. प्रभा बजाज	46–48
9.	शोध पत्रिका 'परम्परा' के 'राष्ट्रवीर दुर्गादास राठौड़' अंक का समीक्षात्मक अध्ययन डॉ. जसवंत शर्मा	49–55
10.	मीडिया का ऐतिहासिक लिहाफ और भावी आकाश ममता चौहान	56–60
11.	महादेवी वर्मा के निबन्धों का वैचारिक धरातल ('क्षणदा' के विशेष संदर्भ में) सुश्री प्रेरणा गौड	61–64
12.	आधुनिक राजस्थानी कविता मांय जथारथावादी भावबोध डॉ. धनंजया अमरावत	65–72
13.	'मोलेला की हस्तशिल्प कला "टेराकोटा"–एक अनुसंधानात्मक अध्ययन अजीत राम चौधरी	73–78

शोध कल्पितम्
ISSN - 2321-9483

वर्तमान पाठयक्रम में परिवर्तन की आवश्यकतायें

डॉ. गुरशरण कौर
परिष्ठ सहायक प्रोफेसर (संगीत)
माता सुंदरी कन्या महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

परिवर्तन सृष्टि का नियम हैं। संसार की सभी जड़ व चेतन समय अनुसार परिवर्तित होती रहती हैं। परिस्थितियों के वर्तमान के अनुकूल परिवर्तित होना समय की आवश्यकता रहती हैं अन्यथा समाज उसे नकार देता है। परिवर्तन यदि वर्तमान की आवश्यकता एवं पुरातन परम्परा मे सामंजस्य स्थापित कर हो तो यह निश्चित रूप से सुखद परिणाम देता है स्वतन्त्रता प्राप्ती के बाद भारत में शिक्षा का प्रसार काफी तेजी से हो रहा है। जिसमें संगीत शिक्षा का प्रसार काफी तेजी से हो रहा है। भारत वर्ष के सभी प्रान्तों में संगीत निश्रण के लिये विद्यालय महाविद्यालय व विश्वविद्यालयों की सरकार द्वारा स्थापना की गई है जहां संगीत को भी अन्य विषय की भांति एक पाठय विषय की तरह पढ़ाया जाता है।

संगीत एक ऐसा विषय है जो शिक्षा के विभिन्न चरणों से गुजरता हुआ मनुष्य के मस्तिष्क के साथसाथ आत्मा को भी प्रभावित करता है। इस कला का प्रभाव सीधे मन पर पड़ता है काका कालेलकर जी ने लिखा है

"संगीत शिक्षा का एक प्रधान अंग है।"
"ज्ञानानन्द या ब्रह्मानन्द में विशेष अन्तर नहीं है।"
"संगीत शून्य जीवन नीरस और अधूरा होता है।"
"संगीट मनुष्य को युद्ध में बल और साहस प्रदान करता है। अतः यह मानसिक और शरीरिक खुराक है।"
"संगीत जीवन का सच्चा साथी है।"

संगीत एक ऐसी कला है। जिसका शास्त्रीय एवं परम्परागत रूप शिक्षा के बिना असम्भव है। प्रत्येक कला में प्रतिभा का होना अतिआवश्यक है किन्तु संगीत में प्रतिभा के साथ सुशिक्षा सम्पूर्ण होना भी आवश्यक है। सुरक्षा तथा विकास करने में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। अतः संगीत का एक पाठय् विषय के रूप में पढ़ाया जाना अति आवश्यक है और हमारे यहां विधालयों में संगीत की स्नातकोत्तर कक्षायें सुचारू रूप से चलाई जा रही हैं। यहां पर संगीत की प्रवृति रूप आवश्यकता संस्थागत संगीत शिक्षण एवं इस क्षेत्र मे सफलता के बदलते प्रतिमान के संदर्भ में निम्न बिन्दूयों को समझना आवश्यक है

Scanned with CamScanner